गज़ल

दिल पेश हम तुम्हीं को दिलदार कर रहे हैं
हम प्यार कर रहे हैं–2

1– काबू में ही नहीं हैं जज्बात हमारे दिल के
कोई तो बात है जो दीदार कर रहे हैं

2–इस वास्ते की हासिल हो जाओ अब हमें तुम
कसमें उठा उठा के इकरार कर रहे हैं

3– मुद्दत गुजर गई है हमें बेकरार रहते
तन्हाईयों को तुमसे गुलजार कर रहे हैं

4– दिल की नजर से देखो चाहत के आईने को
सजदे तुम्हारे दर पे सौ बार कर रहे हैं